Content

।। विषयानुक्रमणिका ।।

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश : पृ. ०१-४३

प्रास्ताविक - उपन्यास के विकास में गद्य का महत्व - पाश्चात्य विद्वानों की एतद् विषयक विभावना - औपन्यासिक भाषा - उपन्यास की भाषा और परिवेश - उपन्यास के चरित्र - निर्माण - में भाषा-कर्म की उपोयगिता - औपन्यासिक भाषा के विभिन्न स्तर - उपन्यास में निरूपित जीवन - दर्शन और भाषा - डॉ. भगवतीशरण मिश्र की जीवन-यात्रा - जन्म तथा शैशव-शिक्षा-दीक्षा-प्रशासनिक सेवा - प्रारम्भिक साहित्यिक संस्कार - लेखक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. मिश्र की औपन्यासिक भाषा विषयक अवधारणा - निष्कर्ष - सन्दर्भानुक्रम।

द्वितीय अध्याय : कथावस्तु के परिप्रेक्ष्य में डॉ. भगवतीशरण मिश्र के उपन्यासों की भाषा : पृ. ४४-१७२

प्रास्ताविक - कथावस्तु और औपन्यासिक भाषा - डॉ. भगवतीशरण मिश्र के उपन्यासों की विभिन्न कोटियाँ - सामाजिक उपन्यास-ऐतिहासिक उपन्यास-पौराणिक उपन्यास-चामत्कारिक एवं आध्यात्मिक अनुभवों से युक्त उपन्यास-मिश्रजी के उपन्यास-सामाजिक उपन्यास : नदी नहीं मुड़ती, एक और अहल्या, सूरज के आने तक, लक्ष्मण-रेखा - डॉ. मिश्र के ऐतिहासिक उपन्यास : पहला सूरज, पीतांबरा, देख कबीरा रोया, का के लागूं पांव, गोबिन्द गाथा, शान्तिदूत - डॉ. मिश्र के पौराणिक उपन्यास : पवनपुत्र, प्रथम पुरुष, पुरुषोत्तम - डॉ. मिश्र के चामत्कारिक एवं आध्यात्मिक अनुभवों से युक्त उपन्यास : बंधक आत्माएँ - इन सभी उपन्यासों की कथावस्तु के सन्दर्भ में उनमें प्रयुक्त भाषा का अध्ययन - निष्कर्ष - सन्दर्भानुक्रम।

तृतीय अध्याय : पात्र और परिवेश के सन्दर्भ में डॉ. मिश्र के उपन्यासों की भाषा : पृ. १७३-२१५

प्रास्ताविक - डॉ. मिश्र के उपन्यासों में पाये जाने वाले विभिन्न वर्ग, वर्ण, जाति और व्यवसाय के पात्र : विभिन्न वर्ग के पात्र - ~~विभिन्न वर्ग के~~ पात्र - व्यावसायिक दृष्टि से - पात्रानुरूप भाषा के औपन्यासिक साक्ष्य पर विभिन्न उदाहरण, पात्रो की विचारधारा

- ऐतिहासिक उपन्यासों के पात्र : भाषा के सन्दर्भ में - परिवेश के सन्दर्भ में डॉ. मिश्र की भाषा - विभिन्न परिवेश : अंग्रेजी परिवेश, बंगाली परिवेश, भोजपुरी परिवेश, राजस्थानी परिवेश, पंजाबी परिवेश- निष्कर्ष - संदर्भानुक्रम ।

चतुर्थ अध्याय : शब्दविचार : **पृ. २१६-३४३**

प्रास्ताविक - मिश्रजी के उपन्यासों में प्रयुक्त विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों के शब्द : संस्कृत - तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्द, अरबी-फारसी या उर्दू, अंग्रेजी, अंग्रेजी के शब्द परिवर्तित व्याकरणिक रूप में, अंग्रेजी-हिन्दी मिश्रित शब्द, पंजाबी, बंगला, भोजपुरी, राजस्थानी अवधि, मैथिली, गुजराती आदि-आदि - अनूदित शब्द - वर्णमैत्री युक्त शब्द - ध्वन्यात्मक शब्द - दृश्यात्मक शब्द - नवीन क्रियारूप - नामधातु क्रिया - प्रेरणार्थक क्रिया, भाववाचक संज्ञा - ध्वनि पुनरावर्तन वाले शब्द - युग्म शब्द - नए रूपक नए विशेषण - विशेषण पदबंध - नए उपमान - विशिष्ट शब्द - आधुनिक सभ्यता से जुड़े हुए शब्द - प्रकीर्ण : व्यक्ति, स्थल, विधि-विधान, पूजा-सामग्री, मन्दिर, देवी देवता, पेड़-पौधे, पुष्प, लड़ाई में उपयोगी साधन सामग्री, पशु-पक्षी, प्राणी से जुड़े हुए शब्द - कला - संगीत, पर्यावरण , शैक्षणिक क्षेत्र, विज्ञान - टेकनोलॉजी तथा रोग, दवा, औषधियों से सम्बन्धित शब्द - निष्कर्ष - सन्दर्भानुक्रम ।

पंचम अध्याय : वाक्यविचार : **पृ. ३४४-४३७**

प्रास्ताविक - वाक्य की परिभाषा - वाक्य के प्रकार - वर्णमैत्री युक्त वाक्य - प्रोप्ति -मुहावरे - कहावतें - सूक्तियाँ - उद्धरण - निष्कर्ष - सन्दर्भानुक्रम ।

षष्ठ अध्याय : डॉ. भगवतीशरण मिश्र की भाषा-शैली के कतिपय अभिलक्षण : **पृ. ४३८-४७२**

प्रास्ताविक - डॉ. मिश्र के उपन्यासों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ : वर्णनात्मक शैली, व्यास शैली, समास शैली, आलंकारिक शैली, तर्कयुक्त गम्भीर शैली, प्रश्न शैली, चिन्तनप्रधान शैली, तरंग शैली, धारा-प्रवाह शैली, परिगणनात्मक शैली, प्रश्नोत्तर शैली, उद्धरण शैली, व्यंग्य शैली, सरल-सुबोध शैली, संस्कृतनिष्ठ शैली, अरबी-फारसीवाली शैली, अंग्रेजी प्रधान शैली, आँचलिक शैली - डॉ. मिश्र की औपन्यासिक भाषा की

विशेषताएँ : सार्थक कथोपकथन, बहुश्रुतता, संक्षिप्तता, सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, नवीन भाषाभिव्यंजना प्रभृति शैलीगत विशेषताएँ - डॉ. मिश्र की भाषागत मर्यादा और सीमा - निष्कर्ष - सन्दर्भानुक्रम ।

सप्तम अध्याय : उपसंहार : पृ. ४७३-४८१

- समग्रावलोकन पर आधारित निष्कर्ष।
- विषय का महत्व व उपलब्धियाँ।
- भविष्य की संभावनाएँ।

परिशिष्ट पृ. ४८२-४८६

(क) उपजीव्य ग्रंथों की सूची
(ख) सहायक ग्रंथों की सूची (हिन्दी)
(ग) सहायक ग्रंथों की सूची (अंग्रेजी)
(घ) पत्र-पत्रिकाएँ